Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 9

राजस्थान का भूगोल एवं विश्व राजनीति (अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध)

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग 9

राजस्थान का भूगोल एवं विश्व राजनीति (अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध)

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार** • राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार • राजस्थान का देशांतारीय विस्तार • राजस्थान की सीमाएं ○ राजस्थान की भौगोलिक सीमारेखा • राजस्थान का सांस्कृतिक विभाजन • क्षेत्रफल के अनुसार राजस्थान के जिले • राजस्थान के जिलों की आकृतियां • राजस्थान का संक्षिप्त विवरण	1
2.	**राजस्थान की प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ** • पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश • अरावली पर्वतीय प्रदेश • पूर्वी मैदानी प्रदेश • दक्षिण-पूर्वी राजस्थान का पठार (हड़ौती पठार) • राजस्थान भौतिक विभाजन का तुलनात्मक अध्ययन	6

3.	**जलवायु: विशेषताएं एवं वर्गीकरण**
	• राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ
	• जलवायु प्रभावित करने वाले कारक
	• पारंपरिक भारतीय मौसम
	• राजस्थान में ऋतुएँ
	  ○ ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून)
	  ○ शीत ऋतु (अक्टूबर से फरवरी)
	  ▪ मानसून प्रत्यावर्तन (शरद ऋतु)
	  ▪ शुष्क शीत ऋतु
	• राजस्थान जलवायु का वर्गीकरण
	  ○ वर्षा की तीव्रता पर आधारित राजस्थान के जलवायु क्षेत्र
	• राजस्थान के जलवायु क्षेत्रों का कोपेन का वर्गीकरण
	• ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण
	• थॉर्नथवेट का राजस्थान के जलवायु क्षेत्रों का वर्गीकरण- (आधार- तापमान, वर्ष और वाष्पीकरण)
	• राजस्थान में वर्षा
	  ○ राजस्थान में वर्षा का वितरण
	• तापमान भिन्नता
	• राजस्थान में सौर विकिरण और धूप की उपलब्धता
		17

4.	**प्रमुख नदियाँ एवं झीलें**
	• राजस्थान की नदियाँ जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं
	  ○ चंबल नदी
	  ○ बनास नदी
	  ○ बाणगंगा नदी
	• राजस्थान की नदियाँ जो अरब सागर में गिरती हैं
	  ○ लूनी नदी
	  ○ माही नदी
	  ○ साबरमती नदी
	• अन्तः स्थलीय प्रवाह नदियाँ
	• सारांश - राजस्थान का अपवाह तंत्र
	• राजस्थान की प्रमुख झीलें
	  ○ राजस्थान की खारे पानी की झीलें
	  ○ राजस्थान में मीठे पानी की झीलें
	• जिलानुसार राजस्थान की झीलें
		28

5.	**प्राकृतिक वनस्पति**
	• वनों का वितरण
	• वन आच्छादन
	• राजस्थान में वनों के प्रकार
	  ○ उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
	  ○ उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
	  ▪ शुष्क सागवान वन
	  ▪ सालार वन
	  ▪ बांस के जंगल
	  ▪ धोकड़ा वन
	  ▪ पलाश वन
	  ▪ खेर वन
	  ▪ बबूल वन
	  ▪ मिश्रित पर्णपाती वन
	  ○ उपोष्णकटिबंधीय पर्वतीय वन
	• वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण
	• वनों के उत्पाद(राजस्थान की वनस्पति)
		49

6.	**राजस्थान में मृदा**
	• मृदा के प्रकार
	• रचना विधि के अनुसार मृदा
	• वैज्ञानिक वर्गीकरण
	• मृदा की समस्याएं
	  ○ मृदा अपरदन
	  ○ मृदा उर्वरता क्षरण की समस्या
	  ○ जलमग्नता/सेम की समस्या
		56

7.	**कृषि: प्रमुख फसलें: उत्पादन व वितरण**
	• राजस्थान में फसलों के प्रकार
	  ○ फसल चक्र के आधार पर वर्गीकरण
	  ○ उपयोग के आधार पर वर्गीकरण
	• कृषि के प्रकार
	• राजस्थान की प्रमुख फसलें
	  ○ गेहूं
	  ○ जौ
	  ○ बाजरा
	  ○ मक्का
	  ○ गन्ना
	  ○ कपास
	  ○ राजस्थान में उगाई जाने वाली अन्य फसलें
	• फसल उत्पादक जिले
	• कृषि एवं वन अनुसंधान केंद्र
	• कृषि फसलों की किस्मे
	• राजस्थान कृषि जलवायु प्रदेश
		61

8.	**प्रमुख खनिज**
	• राजस्थान में खनिजो का वर्गीकरण
	• राजस्थान में धात्विक खनिज
	• राजस्थान में अधात्विक खनिज (RAS-M-2016)
	• ईंधन खनिज
	  ○ यूरेनियम (पिंच ब्लैण्ड) –
	  ○ कोयला **Error! Bookmark not defined.**
	  ○ एच.पी.सी.एल. (राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड)
	  ○ राजस्थान रिफायनरी के लाभ एवं हानि
	• प्राकृतिक गैस
	• सारांश - राजस्थान में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण खनिज
	• राजस्थान के खनिज संसाधनों से जुडी प्रमुख संस्थाएँ
		70

9.	**प्रमुख उद्योग**
	• सीमेंट
	• सूती वस्त्र उद्योग
	• ऊन उद्योग
	• चीनी उद्योग
	• कांच उद्योग
	• डेयरी उद्योग
	• कुटीर उद्योग
	  ○ तेल एवं वनस्पति घी उद्योग
	  ○ बंधाई, छपाई और रंगाई उद्योग
	  ○ खादी उद्योग
	  ○ कृषि आधारित अन्य कुटीर उद्योग
	  ○ पशु आधारित प्रमुख उद्योग
	  ○ वनोपज पर आधारित उद्योग
		85

	• खनिज आधारित उद्योग • हथकरघा उद्योग • प्रमुख इंजीनियरिंग उद्योग • रसायन एवं उर्वरक उद्योग	
10.	**प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें** • राजस्थान में सिंचाई के स्रोत • राजस्थान की प्रमुख बहुउद्देश्य परियोजनाएँ ○ भाखड़ा-नंगल परियोजना ○ चंबल घाटी परियोजना ○ ब्यास परियोजना ○ माही-बजाज सागर परियोजना • राजस्थान में वृहद् सिंचाई परियोजनाएं ○ इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) ○ गंगा-नहर परियोजना ○ सिद्धमुख नोहर सिंचाई परियोजना ○ नर्मदा नहर ○ बीसलपुर परियोजना, टोंक ○ गुडगाँव नहर या यमुना नहर ○ भरतपुर नहर ○ राजस्थान पूर्वी नहर परियोजना (ERCP) ○ परवन वृहद् बहुउद्देश्य सिंचाई परियोजना ○ जवाई बाँध परियोजना ○ नवनेरा बैराज परियोजना • राजस्थान में मध्यम सिंचाई परियोजनाएं • अन्य मध्यम और लघु सिंचाई परियोजना • जल संरक्षण ○ परम्परागत जल संरक्षण की विधियाँ ○ राजस्थान में जल संरक्षण के आधुनिक तरीके • मुख्यमंत्री जल स्वालंबन योजना ○ मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के चरण ○ राजस्थान मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के इंस्टिट्यूशन अरेंजमेंट ○ राजस्थान मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के अंतर्गत प्राथमिकता सूची • राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना (RWSLIP) • राजस्थान के मरू क्षेत्र हेतु जल पुनर्गठन परियोजना (RWSRPD) • बाँध पुनर्वास और सुधार परियोजना	**92**
11.	**ऊर्जा संसाधन** • ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत • ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोत	**108**
12.	**राजस्थान की जनसंख्या और प्रमुख जनजातियाँ** • जनसंख्या वितरण एवं प्रभावित करने वाले कारक • जनसंख्या सांख्यिकी	**116**

	• राजस्थान में जनजाति ○ राजस्थान की जनजातियों की उत्पत्ति ○ राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ ○ जनजाति कल्याण कार्यक्रम	
13.	**वन्यजीव एवं जैव विविधता: चुनौतियां और संरक्षण एवं पर्यावरणीय मुद्दे या समस्यायें** • राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यान • प्रोजेक्ट टाइगर • वन्य जीव अभ्यारण • संरक्षण रिजर्व • सामुदायिक रिजर्व • राजस्थान में बाघ अभयारण्य • राजस्थान में रामसर आर्द्रभूमि • राजस्थान के मृगवन • आखेट निषिद्ध क्षेत्र • राजस्थान के प्रमुख जन्तुआलय • राजस्थान में जैविक पार्क • राजस्थान में लेपर्ड रिजर्व • राजस्थान के बटरफ्लाई पार्क • राजस्थान के जिले और उनके शुभंकर • राष्ट्रिय उद्यान , अभयारण्य, जैविक पार्क • राजस्थान में जैव विविधता पर संकट और संरक्षण ○ वन्य जीवों का महत्व ○ वन्य जीवों के महत्व के कारण ○ वन्य जीवों के कमी के कारण ○ संरक्षण हेतु प्रयास • राजस्थान में जैव विविधता ○ मरुस्थिलय पारिस्थिकी तंत्र ○ अरावली पर्वतीय पारिस्थिकी तंत्र ○ पूर्वी मैदानी पारिस्थिकी तंत्र ○ हड़ौती पारिस्थिकी तंत्र ○ राज्य जैव विविधता के संकट के कारण • पारिस्थिकी परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक ○ मरुस्थलीय करण ○ सुखा व अकाल • राजस्थान में जैव विवधता का संरक्षण • राजस्थान में पर्यावरणीय मुद्दे या समस्यायें ○ पर्यावरण प्रदूषण (Environmental Pollution) • राजस्थान में वानिकी कार्यक्रम	**134**
14.	**पर्यटन स्थल एवं परिपथ** • राजस्थान में पर्यटक परिपथ	**160**

	• राजस्थान में धार्मिक पर्यटक परिपथ
	• राजस्थान में पर्यटन
	  ○ राजस्थान में पर्यटन का विकास (उपलब्धियां)
	  ○ RTDC(राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड)
	  ○ पर्यटकों की आवासीय समस्या
	  ○ पर्यटन नीति
	  ○ राजस्थान में रोप-वे
	  ○ राजस्थान में पर्यटन के विकास के लिए अन्य प्रयास
	  ○ पर्यटन विकास की प्रमुख योजना
	• राजस्थान मे पर्यटन स्थल	

15.	**यूनेस्को की भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना: राजस्थान में संभावना**
	• उद्देश्य एवं महत्व
	• चयन मानदंड
	• सांस्कृतिक
	• प्राकृतिक
	• ग्लोबल जियो पार्क
	  ○ UNESCO ग्लोबल जिओ पार्क, बायोस्फीयर रिजर्व और वर्ल्ड हेरिटेज साईट में अंतर
	  ○ संभावना विशेषता
	• राजस्थान के विश्व धरोहर स्थल
		193

16.	**राजस्थान में पशुधन** • राजस्थान में पशुधन का महत्त्व • पशुधन विकास की समस्याएँ • राजस्थान 20 वी पशुगणना - 2019 • राजस्थान में मवेशियों की नस्ल • राजस्थान की भैंस की नस्लें • राजस्थान में बकरी की नस्लें • राजस्थान में भेड़ की नस्लें • राजस्थान में ऊंट की नस्लें • राजस्थान में घोड़े की नस्लें • सुअर • कुक्कुट /मुर्गी • मत्स्य पालन • राजस्थान में डेयरी विकास • पशु विकास योजनाएँ • राजस्थान के पशु संस्थान • राजस्थान में पशु प्रजनन केंद्र • राज्य स्तरीय पशु मेले • राज्य में पशु धन विकास • पशुधन वितरण क्षेत्र	**196**

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

S.No.	Chapter Name	Page No.
17.	**शीत युद्ध के बाद के युग में विश्व** • शीत युद्ध- एक नज़र • शीत युद्ध की महत्वपूर्ण घटनाएँ ○ याल्टा और पॉट्सडैम सम्मेलन ○ आयरन कर्टेन ○ ट्रूमैन सिद्धांत ○ मार्शल योजना बनाम कमिनफॉर्म ○ बर्लिन की घेराबंदी 1948 ○ क्यूबा मिसाइल संकट, 1962 ○ नाटो बनाम वारसॉ समझौता ○ वियतनाम युद्ध ○ 'ग्लासनोस्त'(Openness) और 'पेरेस्त्रोइका' (Restructuring) नीतियाँ ○ जर्मनी का एकीकरण ○ यूएसएसआर का विघटन • शीत युद्ध का अंत • शीत युद्धोत्तर विश्व • अमेरिकी वर्चस्व • वर्चस्व • अमेरिकी वर्चस्व के विभिन्न आयाम ○ एक हार्ड पावर के रूप में वर्चस्व ○ खाड़ी युद्ध-I ○ कोसोवो युद्ध (1999) ○ अमेरिका और अल-कायदा मुद्दा ○ 09/11 की घटना ○ इराक पर आक्रमण • संचार के समुद्री मार्ग (SLOC) • सॉफ्ट पावर के रूप में वर्चस्व • अमेरिकी वर्चस्व में गिरावट ○ उभरते हुए शक्ति केन्द्र ○ अमेरिका का अफगान अनुभव ○ ईरान एवं अमेरिकी गतिरोध ○ नाटो में दरारें ○ चीन की आर्थिक उन्नति और उसकी "बेल्ट एंड रोड" पहल ○ ट्रंप की नीतियाँ ○ COVID-19 और अमेरिकी आधिपत्य • नया शीत युद्ध- यूएस-चीन • भारत के लिए अवसर • भारत के लिए खतरा	**210**
18.	**संयुक्त राष्ट्र और क्षेत्रीय संगठन** • संयुक्त राष्ट्र • 4 मुख्य उद्देश्य	**222**

- संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA)
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (UNSC)
- संयुक्त राष्ट्र सचिवालय
- संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद् (ECOSOC)
- अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ)
- अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में भारत
- संयुक्त राष्ट्र सुधार
- संयुक्त राष्ट्र की विशेष ऐजेन्सियाँ
    - खाद्य और कृषि संगठन (FAO)
    - अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (ICAO)
    - कृषि विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कोष (IFAD)
    - अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)
    - यूनिसेफ
    - संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA)
    - संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)
    - संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)
    - संयुक्त राष्ट्र मानव अधिवास कार्यक्रम (UN-Habitat)
    - विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP)
    - अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO)
    - अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार संगठन (ITU)
    - संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO)
    - संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO)
    - संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD)
    - ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (UNODC)
    - संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR)
    - एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग
- अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)
    - उद्देश्य
    - कार्य
    - भारत का कोटा और रैंकिंग
- विश्व बैंक
    - 5 विकास संस्थान
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
- विश्व के लिये संयुक्त राष्ट्र का योगदान
    - शांति एवं सुरक्षा बनाए रखना
    - नाभिकीय हथियारों के प्रसार को रोकना
    - निरस्त्रीकरण का समर्थन
    - नरसंहार रोकना
    - आर्थिक विकास
    - सामाजिक विकास
    - वैश्विक मुद्दों पर अग्रणी-
    - मानवाधिकार
    - पर्यावरण
    - स्वास्थ्य
- संयुक्त राष्ट्र एवं भारत
- भारत में संयुक्त राष्ट्र का योगदान
    - प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिये एशियाई एवं प्रशांत केन्द्र (APCTT)
    - खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO)-
    - कृषि विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय कोष (IFAD)-

	○ अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)- ○ प्रवासन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय संगठन (IOM) ○ यूनेस्को - महात्मा गाँधी शांति एवं सतत् विकास हेतु शिक्षण संस्थान (MGIEP)- ○ लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तीकरण हेतु संयुक्त राष्ट्र इकाई (UN-Women)- ○ भारत एवं पाकिस्तान में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षक समूह (UNMOGIP) • भारत का संयुक्त राष्ट्र में योगदान • क्षेत्रीय संगठन ○ दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) - ○ भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) ○ एशिया - प्रशांत महासागरीय आर्थिक सहयोग (APEC) ○ बांग्लादेश भूटान भारत नेपाल (BBIN) ○ बी सी आई एम (BCIM) ○ बिम्सटेक ○ ब्रिक्स ○ जी -4 ○ भारत-ब्राज़ील-दक्षिण अफ्रीका - IBSA ○ जी - 7 ○ हिंद महासागर रिम एसोसिएशन ○ मेकांग-गंगा सहयोग ○ ट्रांस-अटलांटिक व्यापार और निवेश भागीदारी (T-TIP) ○ शंघाई सहयोग संगठन ○ दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन ○ आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ○ G - 20 ○ पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (OPEC) ○ ट्रांस पैसिफिक पार्टनरशिप - टीपीपी ○ क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP) ○ परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) ○ मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (MTCR) ○ ऑस्ट्रेलिया समूह ○ वासेनार अरेंजमेंट ○ अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन ○ अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA)	
19.	**अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद** • आतंकवाद के साधन • आतंकवाद का वर्गीकरण ○ बाह्य राज्य अभिकर्ताओं द्वारा आतंकवाद ○ गैर-राज्य अभिकर्ताओं द्वारा आतंकवाद ○ आतंकवाद के प्रकार ○ आतंकवाद के कारण ○ आतंकवादी गतिविधियाँ • भारत में आतंकवाद ○ पाकिस्तान की राज्य नीति के रूप में आतंक ○ भारत में आतंकवाद की श्रेणियाँ ○ भीतरी क्षेत्रों में आतंकवाद ○ भारत में प्रमुख भीतरी क्षेत्रों में आतंकवादी हमले ○ 'हॉट परस्यूट' और 'सर्जिकल स्ट्राइक'	**261**

	• वैश्विक आतंकवाद सूचकांक 2020
	  ○ आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित देश
	  ○ आतंकवाद से सबसे कम प्रभावित देश
	• आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए उपाय
	  ○ आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए भारत की रणनीति
	  ○ भारत के आतंकवाद विरोधी उपाय
	• आतंकवाद के लिए वित्तपोषण
	  ○ स्रोत
	• आतंकवाद के वित्तपोषण पर अंकुश लगाने के लिए सरकार के कदम
	• वित्तीय कार्रवाई कार्य बल
	• आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सरकार की पहल
	  ○ विधायी उपाय
	• राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) (संशोधन) अधिनियम 2019
	  ○ संस्थागत पहल
	  ○ नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड (NATGRID)
	  ○ काउंटर इंसर्जेंसी और एंटी टेररिस्ट गार्ड स्कूल
	  ○ मल्टी एजेंसी सेंटर (मैक) का पुनरुद्धार	

20.	**भारत की विदेश नीति**
	• विदेश नीति के निर्धारक
	• भारत की विदेश नीति के मूल सिद्धांत
	  ○ पंचशील
	  ○ गुटनिरपेक्षता की नीति
	  ○ उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद विरोधी की नीति
	  ○ अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान
	• भारत की विदेश नीति का विकास
	  ○ पहला चरण (1947-62)- आशावादी गुटनिरपेक्षता
	  ○ दूसरा चरण (1962-71)- यथार्थवाद और प्रतिलाभ का दशक
	  ○ तीसरा चरण (1971-91)- क्षेत्रीय दावे का चरण
	  ○ चौथा चरण (1991-98)-सामरिक स्वायत्तता की रक्षा
	  ○ पाँचवां चरण (1998-2013)- शक्ति संतुलन
	  ○ छठा चरण (2013-अब तक)- ऊर्जावान कूटनीति
	• गुजराल सिद्धांत
	  ○ अनुप्रयोग
	• भारत-अमेरिका संबंध
	• ऐतिहासिक संबंध
	• सहयोग के क्षेत्र
	  ○ राजनीतिक संबंध
	  ○ आर्थिक संबंध
	  ○ रक्षा और सुरक्षा
	  ○ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन
	  ○ विज्ञान और तकनीक/अंतरिक्ष सहयोग
	  ○ शिक्षा पर सहयोग
	  ○ प्रवासी और लोगों से लोगों के बीच संबंध
	  ○ बहुपक्षीय सहयोग
	  ○ चुनौतियाँ
	• भारत-चीन संबंध
	  ○ सहयोग के क्षेत्र
	  ○ मुद्दे
		275

	• भारत-रूस संबंध
	  ○ सहयोग के क्षेत्र
	  ○ मुद्दे
	• भारत की विदेश नीति में आवश्यक सुधार
	• नीति में अधिक यथार्थवाद की आवश्यकता
	• मजबूत अर्थव्यवस्था की आवश्यकता
	• बहु संरेखण की आवश्यकता
	• अधिक जोखिम की आवश्यकता	

21.	**भू-राजनीतिक और सामरिक विकास**
	• दक्षिण एशिया की भू-राजनीति
	• दक्षिण एशियाई क्षेत्र के महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक मुद्दे
	• हिंद महासागर क्षेत्र
	  ○ भारत के लिये हिंद महासागर का महत्त्व
	  ○ भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता और चीन
	• भारत के दावे
	• पाकिस्तान का दावा
	• चीन का दावा
	• विवाद के कारण
	• विवादित परियोजनाएँ
	• सर क्रीक मुद्दा
	• पाकिस्तान का दावा
	• संगठित अपराध-
	• भारत और नेपाल के बीच सीमा विवाद
	  ○ नेपाल का दावा
	  ○ भारत का दावा
	  ○ सीमा विवाद को सुलझाने के प्रयास
	• भारत-बांग्लादेश मुद्दे
	• भारत, श्रीलंका और चीन के मुद्दे
	  ○ श्रीलंका में तमिलों के मुद्दे
	• दक्षिण पूर्व एशिया की भू-राजनीति
	• दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र पर भारत-चीन संबंधों का प्रभाव
	  ○ पश्चिम एशिया की भू-राजनीति
	  ○ पश्चिम एशियाई क्षेत्र में अशांति के प्रमुख कारण
	  ○ क्षेत्र में प्रमुख मुद्दे
		291

1 CHAPTER राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

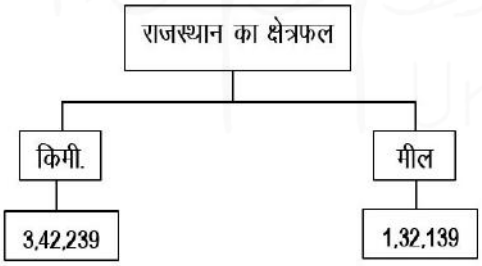

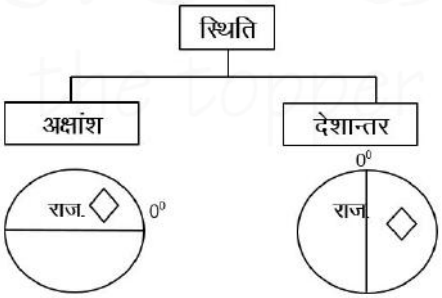

- **अवस्थिति: भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग** में अवस्थित
  - **अक्षांशीय विस्तार:** 23°3′ से 30°12′ उत्तरी अक्षांश
  - **देशांतरीय विस्तार:** 69°30′ से 78°17′ पूर्वी देशान्तर
- राजस्थान **क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य** है।
- **आकार:** पतंगाकार
  - **लम्बाई:** उत्तर से दक्षिण तक 826 किलोमीटर
  - **चौड़ाई:** पूर्व से पश्चिम तक 869 किलोमीटर
- **क्षेत्रफल:** 3.4 लाख वर्ग किलोमीटर (**भारत** के कुल क्षेत्रफल **का 10.43%**)
- **कर्क रेखा** (23 ½^0 उत्तरी अक्षांश) इसके दक्षिणी छोर पर **बाँसवाड़ा के पास से गुजरती** है।
- **ड़ोसी राज्य:**
  - उत्तर - **पंजाब**
  - उत्तर-पूर्व - **हरियाणा**
  - पूर्व - **उत्तर प्रदेश**
  - दक्षिण-पूर्व - **मध्य प्रदेश**
  - दक्षिण-पश्चिम - **गुजरात**

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार

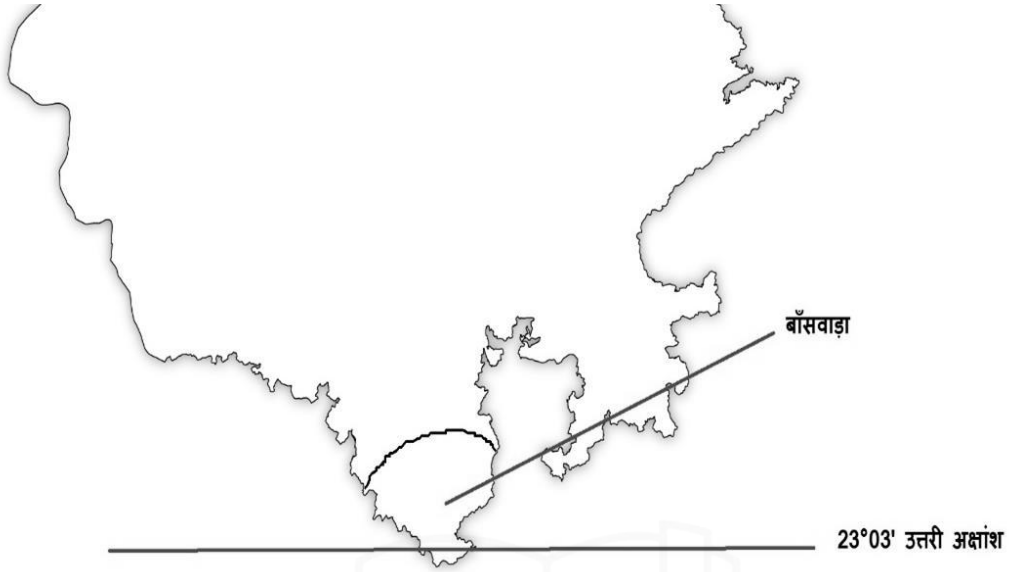

- **अक्षांश** - 23°3′ से 30°12′ उत्तरी अक्षांश
  ↓ ↓
- **स्थान**: बोरकुंड गाँव - कोणा गाँव
- **जिला**- बाँसवाडा - श्रीगंगानगर
- **दिशा** - दक्षिण (826 किमी) - उत्तर

राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार

- **देशान्तर -** 69°30′ से 78°17′ पूर्वी देशान्तर
  ↓ ↓
- **स्थान**: कटरा गाँव - सिलाना गाँव
- **जिला**- जैसलमेर - धौलपुर
- **दिशा** - पश्चिम (869 किमी) - पूर्व

पश्चिम (जैसलमेर) और पूर्व (धौलपुर) के मध्य समय अंतर - **35 मिनट और 8 सेकंड**

राजस्थान की सीमाएँ

- **अंतर्राष्ट्रीय सीमा:** पाकिस्तान के साथ 1070 किलोमीटर लम्बी (रैडक्लिफ) सीमा (RAS-P-1998)
  - **सीमावर्ती राज्य:** गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर
- **राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा**: 4850 किमी।
  - **पंजाब**: 89 किमी - सर्वाधिक: श्री गंगानगर / न्यूनतम: हनुमानगढ़
  - **हरियाणा**: 1,262 किमी - सर्वाधिक: हनुमानगढ़/ न्यूनतम: जयपुर
  - **उत्तरप्रदेश**: 877 किमी - सर्वाधिकः भरतपुर / न्यूनतमः धौलपुर
  - **मध्य प्रदेश**: 1,600 किमी - सर्वाधिक: झालावाड़ / न्यूनतम: भीलवाड़ा
  - **गुजरात**: 102.2 किमी - सर्वाधिक: उदयपुर / न्यूनतम: बाड़मेर
- **राजस्थान के परिधीय जिले**: 25
- **अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित पाकिस्तान के 2 राज्य हैं** - पंजाब और सिंध

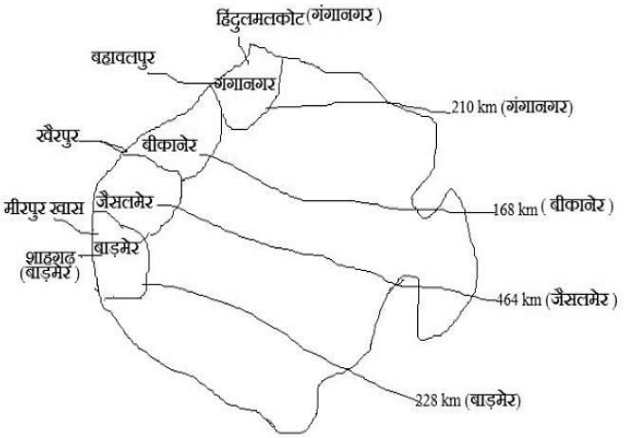

राजस्थान की भौगोलिक सीमारेखा

राज्य	अन्य राज्यों की सीमा को स्पर्श करने वाले राजस्थान के ज़िले
मध्य प्रदेश (1,600 किमी)	10 (धौलपुर,करौली,सवाई माधोपुर,कोटा,बाराँ,झालावाड़,चित्तौड़गढ़,भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़)
पंजाब (89 किमी.)	2 (हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर)
हरियाणा (1,262 किमी.)	7 (हनुमानगढ़, चूरू, झुँझुनूं, सीकर, जयपुर, अलवर, भरतपुर)
उत्तर प्रदेश (877 किमी.)	2 (धौलपुर, भरतपुर)
गुजरात (1,022 किमी.)	6 (उदयपुर, बाड़मेर, सिरोही, जालौर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा)

- **राजस्थान के 8 ज़िले अन्तर्वर्ती** है - जोधपुर, बूँदी, टोंक, राजसमन्द, अजमेर, पाली, नागौर और दौसा
- **चित्तौड़गढ** और **अजमेर** दोनों जिले **विभाजित** है।
  - राजसमन्द अजमेर को 2 भागो में विभाजित करता है।

- **पाली** - सबसे अधिकतम 8 ज़िलों से सीमा बनाता है।
- **राजस्थान के केवल अन्तर्राज्यीय सीमा वाले जिले**: 21
- **2 जिले** है जिनकी **अन्तर्राज्यीय** एवं **अन्तर्राष्ट्रीय सीमा** है
  - **गंगानगर** (पाकिस्तान + पंजाब),
  - **बाड़मेर** (पाकिस्तान+ गुजरात)
- राजस्थान के **4 जिले** है जिनकी सीमा दो राज्यों से लगती है।
  - **हनुमानगढ़**: पंजाब / हरियाणा
  - **भरतपुर**- हरियाणा / उत्तरप्रदेश
  - **धौलपुर**:- उत्तरप्रदेश / मध्यप्रदेश
  - **बाँसवाड़ा**:- मध्यप्रदेश / गुजरात
- **झालावाड़** जिले की **अन्तर्राज्यीय सीमा** सबसे **लंबी** है जो **मध्यप्रदेश** के साथ लगती है।
- **बाड़मेर** जिला **सबसे छोटी अन्तर्राज्यीय सीमा** बनाता है जो **गुजरात** से मिलती है।

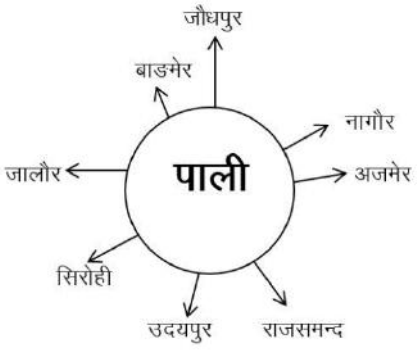

राजस्थान का सांस्कृतिक विभाजन

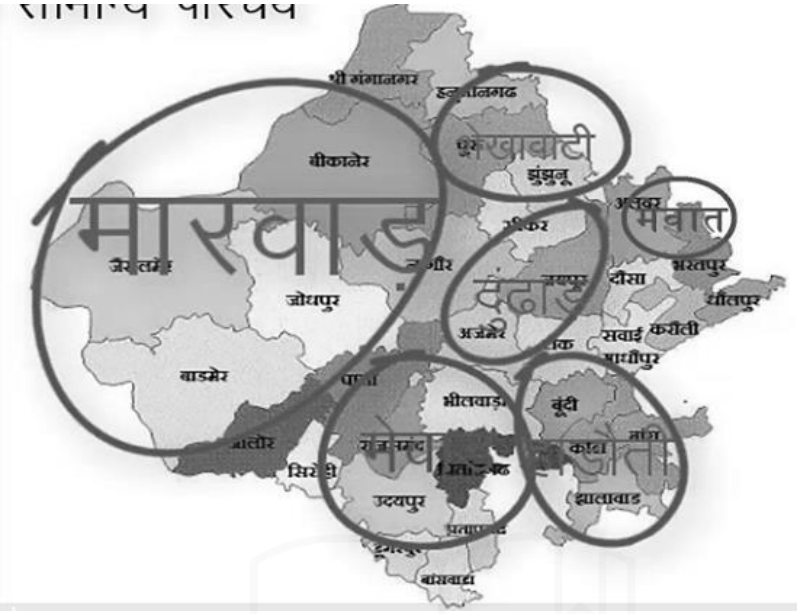

विभाजन	आने वाले ज़िले
मेवाड़	• उदयपुर, राजसमंद, भीलवाडा, चित्तौड़गढ
मारवाड़	• जोधपुर, नागौर, पाली, बीकानेर, जैसलमेर, बाडमेर
ढूँढाड़	• जयपुर, दौसा, टोंक व अजमेर का भाग
माल/हाडौती	• कोटा , बूँदी, बाराँ, झालावाड़
शेखावाटी	• चूरू, सीकर, झुँन्झुनूं
मेवात	• अलवर, भरतपुर
वागड़	• डूँगरपुर, बाँसवाडा
बांगड़	• पाली, सीकर, नागौर और झुँन्झुनूं
राठी	• बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर
भोराट	• उदयपुर की गोगुन्दा पहाड़ियों और राजसमन्द की कुम्भलगढ़ पहाड़ियों के मध्य का पठारी क्षेत्र
मालवा	• प्रतापगढ़ और झालावाड़
मरू	• जोधपुर संभाग
मत्स्य	• अलवर, भरतपुर, करौली और धौलपुर
बीड	• झुँन्झुनूं में स्थित चारागाह भूमि
यौधेय	• हनुमानगढ़ और गंगानगर

क्षेत्रफल के अनुसार राजस्थान के जिले

सबसे बड़े ज़िले	सबसे छोटे ज़िले
1. जैसलमेर (38401 वर्ग किमी) ● राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 11.22% ● राजस्थान का एकमात्र ज़िला जिसका क्षेत्रफल 10% से ज्यादा है।	1. धौलपुर (3034 वर्ग किमी) ● राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 0.89% ● राजस्थान का एकमात्र ज़िला जिसका क्षेत्रफल 1% से कम है।
2. बीकानेर (30239 वर्ग किमी)	2. दौसा (3432 वर्ग किमी)
3. बाड़मेर	3. डूँगरपुर
4. जोधपुर	4. प्रतापगढ़

राजस्थान के जिलों की आकृतियाँ

- **अजमेर**- त्रिभुजाकार
- **चित्तौड़** - घोड़े की नाल
- **भीलवाड़ा** - लगभग आयताकार
- **सीकर**- प्यालाकार / अर्द्धचंद्राकार
- **जोधपुर**- मयूराकार
- **जैसलमेर** – अनियमित बहुभुज
- **बाड़मेर**- भारत जैसा
- **दौसा**- धनुषाकार
- **टोंक** - पतंगाकार/चतुर्भुजाकार
- **करौली**- बतखाकार

राजस्थान का संक्षिप्त विवरण

राजकीय पशु : चिंकारा		राजकीय पक्षी : गोडावण	
राजकीय घरेलू पशु : ऊँट		राजकीय वृक्ष : खेजड़ी	
राजकीय पुष्प : रोहिड़ा के फूल		राजकीय लोक नृत्य : घूमर	

2 CHAPTER राजस्थान की प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ

राजस्थान की भू-आकृतियों को निम्नलिखित प्रदेशों में विभाजित किया गया है-

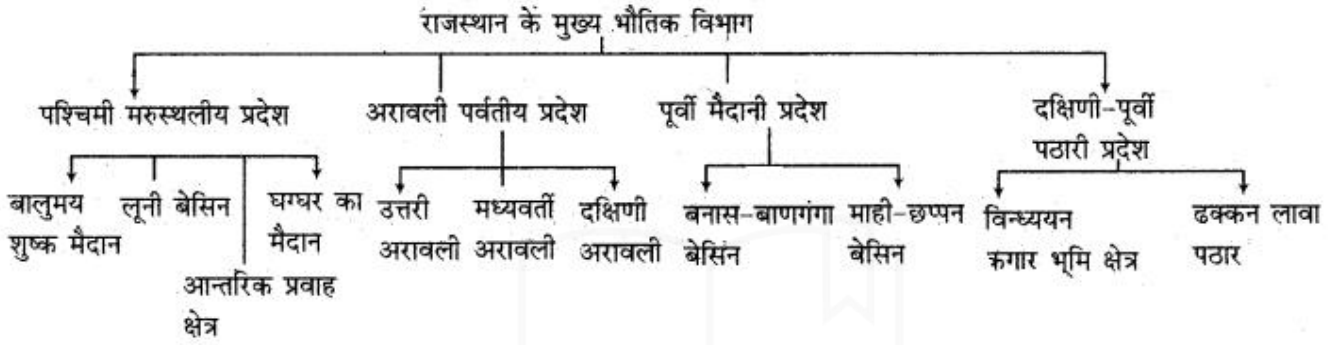

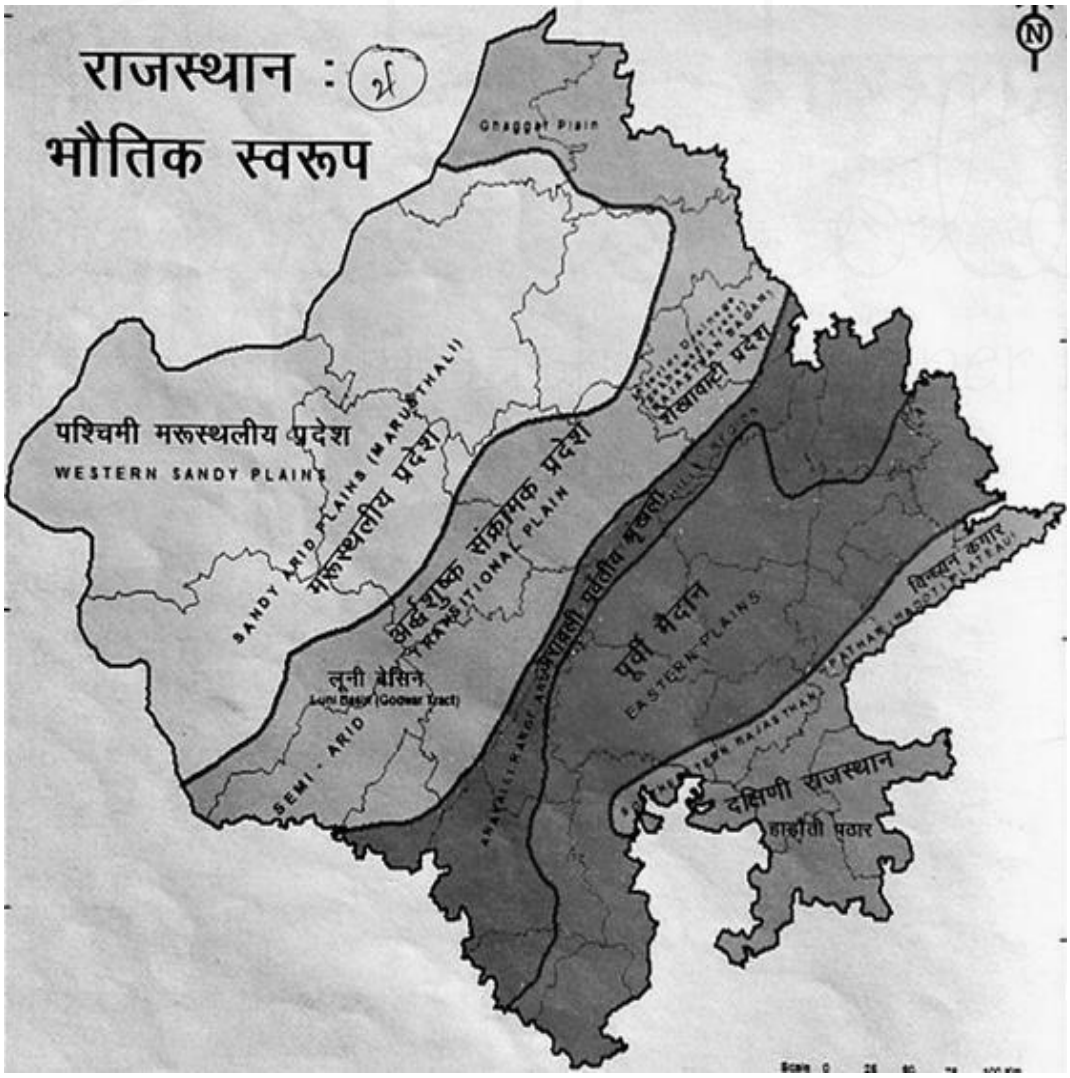

भौतिक विभाग	जनसंख्या	क्षेत्रफल
पश्चिमी रेतीला मैदान	39%	61.11%
अरावली प्रदेश	11%	9.00%
पूर्वी मैदान	40%	23.00%
दक्षिण-पूर्वी पठार	10%	6.89%
योग	100%	100%

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

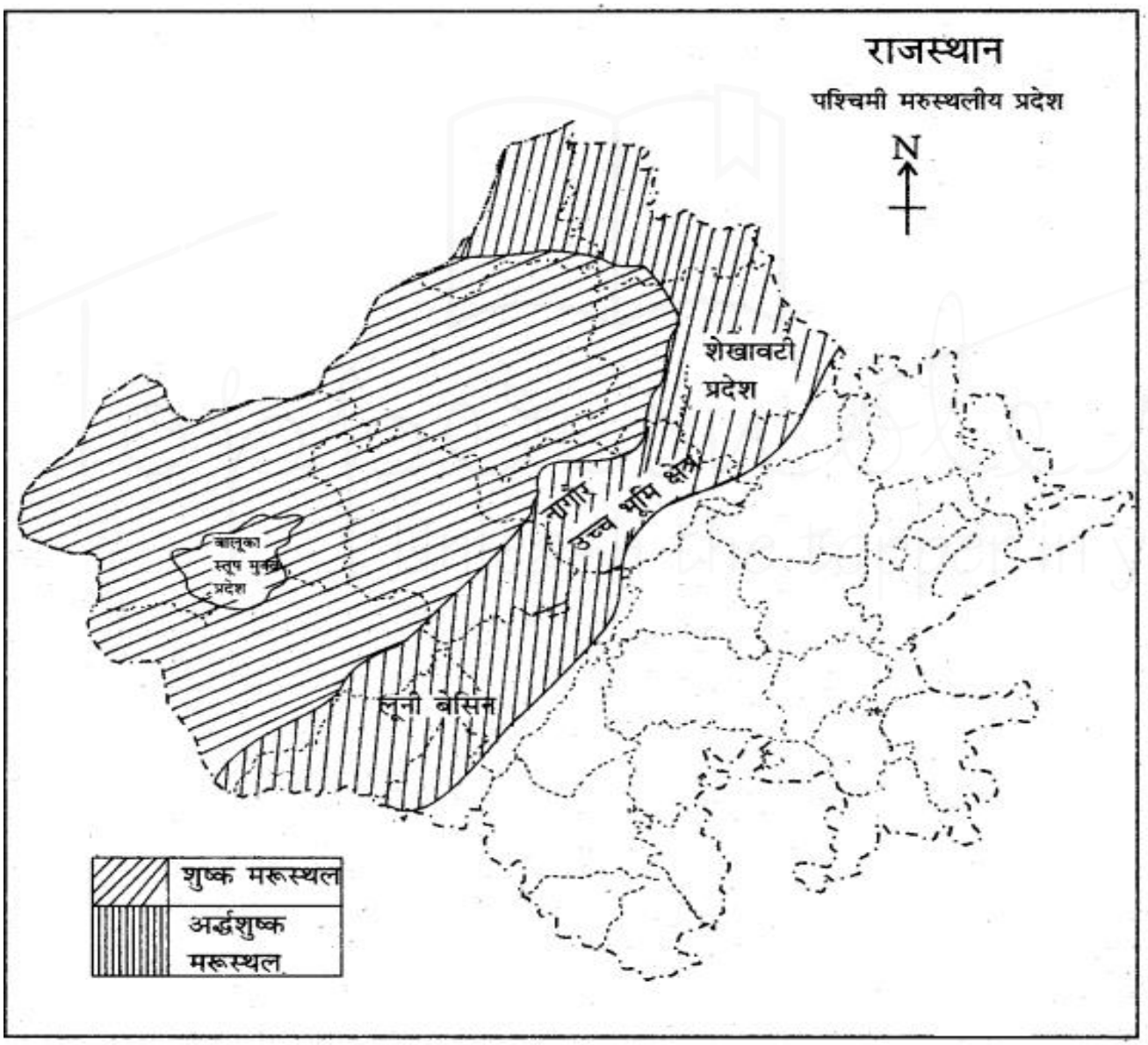

- **अवस्थिति:** राजस्थान के पश्चिम में यह अरावली पर्वतमाला के उत्तर-पश्चिम और पश्चिम में विस्तृत है।
- **सीमा:**
  - **उत्तरी सीमा:** पंजाब
  - **दक्षिण-पश्चिम सीमा:** गुजरात
  - **पश्चिमी सीमा:** भारत और पाकिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा
  - **पूर्वी सीमा:** उदयपुर जिले के उत्तर में अरावली श्रेणी के पश्चिमी उप पर्वतीय क्षेत्र द्वारा चिह्नित है।

- पूर्वी सीमा के आगे यह क्षेत्र **50 सेमी समवर्षा रेखा द्वारा चिन्हित** है।
- यह **बालू मिट्टी** का विस्तृत मैदान है और पानी की कमी की वजह से **अनुपजाऊ** है।

जिले	गंगानगर, हनुमानगढ़, झुँझुनूं, सीकर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही
क्षेत्रफल	1,96,747 वर्ग किलोमीटर
लंबाई	640 किलोमीटर
चौड़ाई	300 किलोमीटर
नदी	• लूनी- इसका उद्भव अजमेर में अरावली के दक्षिण पश्चिम से होता है और यह दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और कच्छ के रण (अरब सागर) में गिरती है [केवल बरसात के मौसम के दौरान]। • सहायक नदियाँ- सुकडी और जवाई।

- इसका **पूर्वी भाग थार रेगिस्तान** के रूप में जाना जाता है।
- यह पूरी तरह से **सूखा** है और **मरुस्थलीय वनस्पति** से आच्छादित है।
- **पश्चिमी मरुस्थलीय मैदान** और **पाकिस्तान** लगभग **1070 किलोमीटर** तक अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पार एक दूसरे के सामने अवस्थित हैं।
- **विभाजन** :

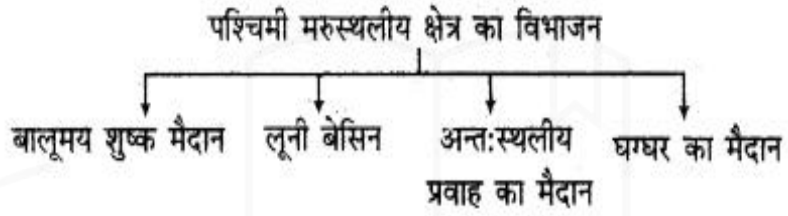

बालूमय शुष्क मैदान

- **क्षेत्रफल**- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 61%
- **जनसंख्या**-40%
- **न्यूनतम वर्षा**- 50 सेमी
- इस क्षेत्र में **बालू** और **अनवरत चट्टानों** का **विशाल विस्तार** पाया जाता है।
- **चूना पत्थर** मुख्य रूप से **जैसलमेर**, **बाड़मेर**, **बीकानेर**, **चूरू**, **हनुमानगढ़** और **श्रीगंगानगर** में पाए जाते हैं।
- **अपरदन स्थलाकृति** बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर और अन्य क्षेत्रों में स्पष्ट है जहाँ सतह पर **चट्टानें** निकली हुई हैं।
- **बालूमय शुष्क मैदान** को आगे **दो उप-क्षेत्रों** में उप-विभाजित किया गया है।

शुष्क मरुस्थली	• **जिला**- बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, चूरू • **क्षेत्रफल** - 120500 वर्ग किमी (थार रेगिस्तान) • **रेत के टीलों की ऊँचाई** - 6 मीटर से 60 मीटर • **रेत के टीलों की लंबाई** - 3 किमी से 5 किमी. • **पश्चिम** की ओर इस बालूमय शुष्क मरुस्थली को **थार मरुस्थल** के नाम से जाना जाता है। • रेत के टीलों का **स्थानांतरण** स्थानीय रूप से **धरियन** के रूप में जाना जाता है।

बालुका स्तूप मुक्त क्षेत्र	• **जिले**- बीकानेर, जैसलमेर, फलोदी और पोखरण • **क्षेत्रफल** - 65 वर्ग किमी. • चूना पत्थर और बलुआ पत्थर की चट्टानें यहाँ **जुरासिक** और **इयोसीन कालिक संरचनाओं** से संबंधित हैं। • यह चट्टानी लेकिन **बालुका स्तूप से विहीन पथ** है। • जैसलमेर शहर के 64 किलोमीटर के घेरे में **कई छोटी पहाड़ियाँ** पाई जाती हैं। • **सूखे तलों** और तटों का **भूजल** के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। • **ग्रिड समूह**, **नीस** , **शिस्ट** और **ग्रेनाइट चट्टानें** भी पाई जाती हैं।

आकार व **हवा की दिशा** के आधार पर **निम्नलिखित प्रकार** के **बालुका स्तूप/ टीले** होते हैं-

अनुप्रस्थ बालुका स्तूप	• दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर अवस्थित हैं । (**सर्वाधिक -जोधपुर**) • प्रचलित हवाओं के समानांतर और अधिकतर तलवार के आकार के होते हैं। • धुरी हवा की दिशा के समानांतर होती है।
अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप या बरखान	• टीलों की चौड़ाई -100 मीटर से 200 मीटर • टीलों की ऊँचाई-10 मीटर से 20 मीटर • टीले में मंद ढाल वाला उत्तल पक्ष और तीव्र ढलान वाला अनुप्रस्थ पक्ष होता है। • ये टीले चलायमान होते हैं। (**सर्वाधिक -शेखावाटी क्षेत्र में**) • ये अलग-थलग या कभी-कभी साथ-साथ पंक्तियों में पाए जाते हैं।
अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप	• टीले पवन की दिशा में बनते हैं। (**सर्वाधिक - जैसलमेर**) • आमतौर पर मरुस्थली के पूर्वी और उत्तरी भागों में पाया जाता है। • ये U आकार के टीले हैं।
तारा बालुका स्तूप	• मोहनगढ़ , सूरतगढ़ और पोकरण (**संख्या में सर्वाधिक**)

अर्ध-शुष्क बेसिन या राजस्थान बाँगर

- **बालूमय शुष्क मैदानों** और **अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन मैदान** को **25 सेमी समवर्षा** रेखा विभाजित करती है।
- सबसे पश्चिमी हिस्सा जो **'महान मरुस्थल'** है, बालुका स्तूपों से आच्छादित है, जो पाकिस्तान की सीमा से लगे **महान रण** से लेकर **पंजाब** तक फैली हुई है।
- बालुका स्तूपों का **स्तर** और विस्तार इस क्षेत्र में **आर्थिक गतिविधियों** को बहुत अधिक **प्रभावित** करता है।
- **राजस्थान** का **63 प्रतिशत** बालुका स्तूप **क्षेत्र** बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर के रेगिस्तानी जिलों में **केंद्रित** है।
- **जिला** - जयपुर, जोधपुर, नागौर, पाली, जालौर, बाड़मेर
- **क्षेत्रफल** - 7500 वर्ग किमी
- **वर्षा** - 20 सेमी
- यह **पूर्वी भाग** में स्थित है और इसका **दक्षिण-पूर्वी भाग लूनी** द्वारा सिंचित है।
- **अवनालिकाओं** ने एक **अनूठे परिदृश्य** को जन्म दिया है। इसका **पूर्वी भाग सतही रेत** के **जमाव** से **आच्छादित** है।
- उत्तर की ओर **शेखावाटी पथ** है जो **अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन मैदान** है जिसमें **अन्तःस्थलीय जल प्रवाह** वाली **सांभर**, **डीडवाना** आदि लवणीय झीलें पायी जाती हैं।
- चरम उत्तर में **घग्गर का मैदान** अवस्थित है।

घग्गर का मैदान	• **निर्माण**-घग्घर, वैदिक सरस्वती, सतलज एवं चौतांग नदियों की जलोढ़ मिट्टी से • **विस्तार**- हनुमानगढ़, गंगानगर। • घग्घर नदी के घाट को "**नाली**" कहते है। • **वर्तमान** में मृत नदी नाम से विख्यात। • **वर्षा** ऋतु में **बाढ़** आने पर हनुमानगढ़ में **जलमग्न।** • **भटनेर** के पास **रेगिस्तान में विलुप्त।**
शेखावाटी प्रदेश **(**RAS-M -2018**)**	• **अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन मैदान** के भीतर **राजस्थान सीमा** तक **लूनी बेसिन** के उत्तर में क्षेत्र **आच्छादित** है। • **जिला** - चूरू, सीकर, झुँझुनूं और नागौरी(**अंत:प्रवाह क्षेत्र**) • **पूर्वी सीमा** को **50 सेमी समवर्षण रेखा** द्वारा **चिह्नित** किया गया है। • **जोहड़** - पानी के कच्चे कुएँ, **सर** -मानसून के दौरान बनने वाले तालाब • **बीड** -शेखावाटी के चारागाह के मैदान • पशुधन, दुग्ध उत्पादन और डेयरी इस क्षेत्र का **प्रमुख व्यवसाय** है। • अरावली की पहाड़ियाँ इस क्षेत्र से **दक्षिण** से **उत्तर** की **ओर** बहती हैं, जो लगभग **दो हिस्सों** में कटती हैं। • शेखावाटी इलाकों की **स्थलाकृति** की विशेषता **लहरदार रेतीले** इलाके है, जो **अनुदैर्ध्य रेत** के टीलों से होकर **गुजरती** है। • केवल एक **मौसमी नदी कांतली** यहाँ प्रवाहित होती है और जब यह **चूरू** जिले में प्रवेश करती है, वह भी **रेतीले इलाके** में खो जाती है। • इस प्रकार, यह क्षेत्र **अन्तः स्थलीय जल निकासी** का **क्षेत्र** है नदियों का नहीं। • यहाँ रेत के टीले **अनुप्रस्थ प्रकार** (बरखान प्रकार) के हैं, जबकि **अन्य** क्षेत्रों में वे **अनुदैर्ध्य** प्रकार के हैं। • समुद्र तल से **450 मी. ऊँचाई** वाले इस क्षेत्र में **चूने की परत** पाई जाती है।

नागौरी उच्च भूमि	• पूरा क्षेत्र **बंजर** और **रेतीला** है। **परबतसर** और कुछ **पहाड़ियों** को छोड़कर कोई **पहाड़ नहीं** हैं। • **नागौर** के आसपास का क्षेत्र रेत के **बाँलुका स्तूपों** से **मुक्त** है। • समुद्र तल से इस क्षेत्र की **औसत ऊंचाई** - 300 मीटर से 500 मीटर है। • **वर्षा** - पश्चिम में 25 सेमी से पूर्व में 50 सेमी • यह क्षेत्र **रेतीली पहाड़ियों** और **निम्न गर्तों** से भरा हुआ है। • **तापमान अधिक** होने के कारण, **खारे पानी** के **वाष्पीकरण** से इन गड्ढों में **नमक** और **सोडा** जमा हो जाता है। इस कारण इस क्षेत्र को **बांका पट्टी या कूबड़ पट्टी** कहा जाता है |(**नागौर -अजमेर**) • इस क्षेत्र की **महत्वपूर्ण झीलें** सांभर, डेगाना, डीडवाना हैं।
गोडवाड़/ लूनी-जवाई बेसिन प्रदेश	• **जिला** - बाड़मेर, जलौर, जोधपुर, नागौर क्षेत्र - 34866.4 वर्ग किमी • बेसिन **लूनी नदी** और उसकी **सहायक नदियों** बांडी, सागी, आदि द्वारा **सिंचित** है। • लूनी नदी **स्रोत से तिवारा** (बाड़मेर) तक के **क्षेत्र** को कवर करती है जहाँ **सुकडी नदी** मिलती है और बेसिन की **दक्षिणी सीमा** का **परिसीमन** करती है। • लूनी नदी **अजमेर** के पास **अरावली पहाड़ियों** से निकलती है और **दक्षिण-पश्चिम** की ओर **बहती** है। इसकी **सहायक नदियाँ** जोजडी, लिलडी, सुकडी, बांडी, जवाई, खारी, सागी, मित्री आदि हैं। • लूनी में **वर्षा** के दौरान **बाढ़** आती है। • स्थलाकृति **खड़ी ढलानों** और **विस्तृत जलोढ़ मैदानों** वाली पहाड़ियों द्वारा **चिह्नित** है। • **लूनी नदी** और **अरावली पर्वतमाला** की **तलहटी** की पहाड़ियों के बीच का **जलोढ़ मैदान ऐयोलिन रेत** के **निक्षेपों** से आच्छादित है। • इस क्षेत्र को स्थानीय रूप से **नाईद** (रेल) के रूप में जाना जाता है और यह सबसे **अच्छे जलोढ़ मैदानों** में से एक है।

मरुस्थल की अन्य विशेषताएँ -

- **प्लाया /खडीन झील** -अस्थायी पानी की झीलें ,जिसमे **पालीवाल ब्राह्मणों** द्वारा की जाने वाली कृषि खड़ीन कृषि कहा जाता है |
- **रन \टाट** - लवणीय ,दलदली व अनुपजाऊ भूमि |
    - **सर्वाधिक** - जैसलमेर

- **प्रमुख रन: -**

तालछापर रन	चूरु
परिहारी रन	चूरु/शेखावाटी
फलोदी रन	जोधपुर
बाप रन	जोधपुर
भाकरी रन	जैसलमेर
पोकरण रन	जैसलमेर

- **ऑकल वुड फोसिल पार्क -**जैसलमेर ,जुरासिक काल के समय (18 करोड़ वर्ष पूर्व)का ,वर्तमान में राष्ट्रीय मरु उधान में स्थित |
- **जल पट्टी\लाठी सीरिज - जैसलमेर में पोकरण व मोहनगढ के बीच** 60 किमी. का क्षेत्र ,प्राचीन सरस्वती का अवशेष, गोडावन की शरण स्थली
- **मरुस्थल का मार्च** - मरुस्थल का आगे बढना ,दक्षिण -पश्चिम से उत्तर -पूर्व की ओर।

अरावली पर्वतीय प्रदेश

- **क्षेत्रफल**-राज्य के भू-भाग का लगभग 9.3% पर पहाड़ी प्रदेश है।
- लेकिन 9% के लगभग भाग पर मुख्य अरावली पर्वतमाला विस्तारित है।
- **अक्षांशीय विस्तार** - 23°20′ से 28°20′ उत्तरी अक्षांश
- **देशांतर विस्तार** - 72°10′ से 77° पूर्वी देशांतर
- **क्षेत्र**-उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, डूँगरपुर, भीलवाड़ा, सीकर, झुंझुनूँ, अजमेर, सिरोही, अलवर तथा पाली व जयपुर के कुछ भाग।
- **जनसंख्या**-राज्य की लगभग 10%।
- **13 जिले** – मुख्य रूप से 7 जिलों में विस्तार
- **वर्षा**-50 सेमी. से 90 सेमी.।
- **अरावली पर्वतमाला** राज्य में एक **वर्षा विभाजक** रेखा का कार्य करती हैं।
- **राज्य का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान** - माउण्ट आबू (लगभग 150 सेमी.) इसी में स्थित हैं
- **जलवायु**-उपआर्द्र जलवायु।
- **मृदा** -काली, भूरी, लाल व कंकरीली मिट्टी।
- अमेरिका के **अप्लेशियन पर्वत के समान** है।
- अरावली पर्वत श्रृंखला **गौंडवाना लैंड** का **अवशेष** है।
- इसके **दक्षिणी भाग** में पठार, **उत्तरी भाग** में मैदान एवं **पश्चिमी भाग** में मरुस्थल है।
- अरावली पर्वत श्रेणी **राजस्थान को दो भागों में बांटती** है, राजनीतिक दृष्टि से राजस्थान के 33 जिलों में से अरावली पर्वत श्रेणी के **पश्चिम** में **13 जिले** तथा **पूर्व** में **20 जिले** हैं।
- अरावली **वलित पर्वतमाला** है।
- **प्री-कैम्ब्रियन युग** में निर्मित।
- **कुल लम्बाई** - 692 किमी. है।
- **खेड़ ब्रह्मा** (पालनपुर, गुजरात) गुजरात, राजस्थान, हरियाणा से होते हुई दिल्ली में **रायसीना हिल्स** (राष्ट्रपति भवन) तक विस्तृत है।
- **राजस्थान** में अरावली श्रृंखला की **लम्बाई 550 किमी**. है। (80%)
- राजस्थान में अरावली श्रृंखला **सिरोही से खेतड़ी** (झुंझुनूँ) के उत्तर पूर्व की ओर फैली हुई है।
- यह पर्वत श्रेणी राज्य में विकर्ण के रूप में **दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व** की ओर **विस्तृत** है।
- अरावली की चौड़ाई **उदयपुर** और **डूंगरपुर** की तरफ **दक्षिण पश्चिम** में से बढ़ने लगती है।
- अरावली पर्वतमाला के **उत्तरी** और **मध्यवर्ती भाग क्वार्टजाइट चट्टानों** से बने हैं।
- जबकि **दक्षिण** में आबू के निकट ऊँचे पर्वतीय खंड **ग्रेनाइट चट्टानों** के बने हुए हैं।
- राजस्थान में **कम वर्षा होने का प्रमुख कारण**-अरावली पर्वत श्रृंखला का मानसून पवनों के समानान्तर होना।
- विश्व की **प्राचीनतम वलित पर्वत श्रृंखला** अरावली है।
- अरावली पर्वत श्रृंखला **धारवाड़ समय के समाप्त** होने तक तथा **विन्ध्यन काल के प्रारम्भ तक अस्तित्व** में आई थी।
- अरावली पर्वत का **सर्वाधिक महत्व**-उत्तर-पश्चिम में फैले विशाल थार के मरूस्थल को दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ने से रोकना है।
- अरावली पर्वतमाला की **औसत ऊँचाई** – 930 मीटर।
- अरावली को अध्ययन के आधार पर **चार भागों में बाँटा** जाता है।